Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

संगीत में रस निष्पत्ति में सहायक प्रमुख घटक

Dr. Akanksha Gupta

Assistant Professor, Music (Vocal), Juhari Devi P.G. Girls College Kainal Road, Kanpur

शोध सार

मानव जब अपने भावों को व्यक्त करने के लिए किसी माध्यम का प्रयोग करता है तो कला का सृजन आरम्भ होता है। कला मानव का अनुभव है। वह उसके भावों, विचारों को अभिव्यक्त करने का एक माध्यम है। कलाओं की यदि बात की जाए तो संगीत भावनाओं की अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम माना गया है। एकमात्र संगीत में ही ऐसी शक्ति है जो चेतन और चेतन दोनों प्रकार के प्राणी जगत को आकर्षित कर सकता है। संगीत का मुख्य उद्देश्य आनन्द की प्राप्ति करना है। संगीत द्वारा आनन्द रस की निष्पत्ति के कारण होता है। संगीत रस निष्पत्ति करने का सबसे प्रभावशाली माध्यम माना गया है। उस रस के परिपाक में अनेक घटक सहयोगी होते हैं। संगीत में बन्दिश, स्वर, लय, ताल, वाद्य इत्यादि के सामंजस्य द्वारा विभिन्न रसों की सृष्टि की जाती है अर्थात् ऐसे अनेक अलंकरण के माध्यम से कलाकार इस रस का अनुभव करके उसका रसपान रसिकों को कराता है।

बीज शब्दः संगीत, रस निष्पत्ति।

सम्पूर्ण विश्व में संगीत कला का अभ्युदय एक ही समय में हुआ ऐसा कहना कठिन है परन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि संगीत किसी ना किसी ना किसी रूप में (गायन, वादन, नृत्य) अपने अस्तित्व का प्रमाण देता रहा है।

संगीत शब्द का अर्थ

'सं' अर्थात् सम्यक रूप से यानी उपांगों के साथ तथा 'गीत' अर्थात् स्वरों के नियमित संयोजन का उच्चारण करना। यहाँ गीत अंग है तथा वादन एवं नर्तन उपांग। इन तीनों के मेल से संगीत शब्द बनता है। कहा भी गया है–

गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते। – संगीत रत्नाकर–पं. शारंगदेव

संगीत को अंग्रेजी में म्यूजिक एवं फारसी में इसे 'इल्मे मुसीकी' की संज्ञा दी गयी है। संगीत का दूसरा नाम 'तौर्यत्रिक' भी है।

भारतीय साहित्य तथा कला में रस को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। संगीत की रसात्मक अभिव्यक्ति सूक्ष्मतम होती है। किसी भी कला की अभिव्यक्ति उसकी सूक्ष्मता पर ही निर्भर करती है, अर्थात् कला का उपादान जितना सूक्ष्म होता है, अभिव्यक्ति भी उतनी ही सूक्ष्म होगी। शिल्पी के उपादान ईंट, पत्थर, छेनी, अत्यन्त स्थल हैं अतः शिल्प में भावों की सूक्ष्माभिव्यक्ति नहीं हो पाती। चित्रकला की तूलिकायें रंग जैसे उपादानों द्वारा रेखाओं, रंगों की मौन अभिव्यक्ति, सूक्ष्म भावों को मुखरित नहीं होने देती। स्वर जैसा सूक्ष्म उपादान भावों की गहराई रहस्य को जैसा व्यक्त कर सकता, अन्य उपादानों के लिए संभव नहीं है। जिस गहनता से रस को संगीत द्वारा अभिव्यक्त किया जा सकता है, अन्य किसी कला के द्वारा सम्भव नहीं है, इसका एक कारण यह भी है अन्य कला सिर्फ चेतन प्राणी को आकृष्ट कर सकती है जबकि संगीत की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके सौन्दर्याकर्षण से चेतन

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

तथा अचेतन दोनों प्रकार के प्राणी मुग्ध हो जाते हैं। पाश्चात्य वैज्ञानिकों का कहना है कि संगीत के द्वारा मनुष्य, जन्तु तथा पेड़–पौधे व लताओं में भी हरियाली छा जाती है।

संगीतज्ञ रस की निष्पत्ति कैसे करता है? संगीत रत्नाकर में इस पर विचार किया गया तथा 96 प्रकार गिनाये गये हैं जिससे रस निष्पत्ति सम्भव है।[1] रस संगीत की आत्मा है। उस रस के परिपाक में संगीत के अनेक घटक सहयोगी होती है।

रस निष्पत्ति में सहायक प्रमुख तत्व

संगीत के सम्बन्ध में जो भी संगीत द्वारा रस की प्राप्ति होती है वह राग, ताल, स्वर, गीत, शैली, लय, वाद्य और कविता के अर्थ से निर्धारित होती है।

राग

हमारा शास्त्रीय संगीत राग–प्रधान है। संगीत का रागों में वर्गीकरण भारतीय शास्त्रीय संगीत की अपनी विशेषता है जो विश्व के किसी भी प्राचीन अथवा अर्वाचीन संगीत में इस रूप में नहीं मिलता। राग का अपना एक विशिष्ट स्वरूप होता है। साहित्य–शास्त्रियों ने नौ रस तथा उनके स्थाई भाव और (33) तैंतीस संचारी भाव बताये हैं। उदाहरणस्वरूप कोई गायक करूण रस का राग गा रहा है तो सहृदय श्रोताओं में करूणा का संचार हो रहा है, कुछ रोने भी लग सकते हैं। योग्य और कुशल गायक–वादक के संगीत में हमें क्षण–क्षण पर नये आनन्द का अनुभव होता है। उदाहरणार्थ –

रस	राग
शान्त रस	मालकोश, जैजैवन्ती, दरबारी–कान्हड़ा तोड़ी
वीर रस	शंकरा, हिण्डोल
श्रृंगार रस	छायानट, बहार, अड़ाना, यमन, बिहाग
करूण	भैरवी

राग की परिभाषा मतंग ने इस प्रकार दी है–

''योऽसौ ध्वनि विशेषस्तु स्वर वर्ण–विभूषितः।

रंजको जनचिन्तानां स च राग उदाहृतः।।''[2]

अर्थात् राग वह राग है जो जनमानस को असीम आनन्द की अनुभूति कराता है। राग भैरव को शान्त और वीर रस प्रधान बताया गया है। भैरव राग में शिव का स्वरूप बताया गया है। संगीत–समयसार में भैरव राग का रूप इस प्रकार बताया गया है–

''भिन्नषड्ज समुद्भूतो मन्यासो धाराभूषितः।

समस्वरों रिपव्यक्तः प्रार्थने भैरव स्मृतः।।''

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

स्वर

सप्तक के प्रत्येक स्वर का सम्बन्ध अलग–अलग रस से जोड़ा गया है।

''सरी वीरेऽभुति रौद्रे ध विभत्से भयानके।

कार्यो गनी तु करूणे हास्य श्रृंगारयार्मयी।।''

स्वरों के साथ सम्बन्धित रस तथा स्थायी भाव इस प्रकार है–

स्वर		रस	स्थायी भाव
1.	षड्ज	वीर, अद्भुत, रौद्र	उत्साह, विस्मय
2.	ऋषभ	वीर, अद्भुत, रौद्र	उत्साह, विस्मय, क्रोध
3.	गान्धार	करुण	शोक
4.	मध्यम	श्रृंगार, हास्य	रति, हास
5.	पंचम	श्रृंगार, हास्य	रति, हास
6.	धैवत	वीभत्स, भयानक	भय, जुगुप्सा
7.	निषाद	करुण	शोक

संगीत जैसी दिव्य, अमूर्त, जगत का अधिष्ठाता 'स्वर' जब विभिन्न सन्दर्भों में व्यवस्थित नियमों के अन्तर्गत तथा प्रस्तुति विषयक गुरु आज्ञा के साथ राग में मुखरित होगा तब भाव–रस की अनेक अनोखी छटा को बिखेरने में किस प्रकार सूक्ष्म होता है ये प्रस्तुति के दौरान देखते बनता है।

श्रुति

संगीत में श्रुति की संख्या 22 मानी गई है। इन श्रुतियों को उनके गुणानुसार 5 भिन्न जातियों में बांटा गया था। जाति गायन काल में ये श्रुतियाँ ही रस निष्पत्ति का प्रमुख स्त्रोत मानी जाती थी। उनके नाम क्रमशः – दीप्ता, आयता, मध्या, मृदु तथा करुणा थे। पं0 अहोबल द्वारा इस पर विस्तार से चर्चा की गयी है। इन जातियों में रसों की निष्पत्ति निम्न प्रकार से मानी गयी है।

श्रुति की जाति	रस
दीप्ता	वीर, अद्भुद
आयता	हास्य, श्रृंगार
मध्या	वीभत्स, भयानक, हास्य, वियोग
मृदु	श्रृंगार रस, वात्सल्य
करूणा	करूण रस, वीभत्स

बंदिश

बंदिश भी रस निष्पत्ति में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कभी–कभी एक ही राग भिन्न–भिन्न बन्दिशों के कारण भिन्न–भिन्न रसों की निष्पत्ति करते हैं। उदाहरणार्थ– एक ही राग में जब गायक कलाकार दो भिन्न–भिन्न बंदिशों की प्रस्तुति मंच पर देते हैं तो क्षण भर में सभा का वातावरण परिवर्तित हो उठता है, जैसे राग श्याम कल्याण।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

1. वात्सल्य रस

खेलत आंगन नन्दलाल, चंचल चरण चपल पड़े।

2. भक्तिपूर्ण

शंकर शिवदानी भोलेनाथ, त्रिभुवन के स्वामी विश्वनाथ।

राग मालकौंस

श्रृंगार रस – मुख मोड़–मोड़ मुस्कात जात।

वीर रस – भेरी बजी संग्राम की।

करुण रस – हम खोज, खोज गये हार।

इत्यादि कई रागों में इसी प्रकार अनेक भिन्न–भिन्न रसों की बन्दिशें रचित हैं जिनकी प्रस्तुति के माध्यम से रस की निष्पत्ति होती है।

ताल एवं लय

स्वर और लय संगीत के दो आधार स्तम्भ है। संगीत और लय का सम्बन्ध आदि काल से चला आ रहा है। अवनद्य वाद्यों के प्रयोग का उल्लेख वैदिक काल में भी मिलता है।

संगीत का मुख्य उद्देश्य आनन्द की सृष्टि करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति में ताल बड़ा सहायक होता है। जो गीत लय प्रधान होते हैं, वे जनता को सरलता से प्रभावित लेते हैं, इसलिये लोकगीतों के साथ अधिकतर ढोलक का प्रयोग होता है।

प्रकृति और मनुष्य की लय में अन्तर है। सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, मौसम आदि में एक निरन्तर गति है जो अनन्त है। इनकी गति हमेशा एक सी रहती है। मनुष्य द्वारा निर्मित गति आवश्यकतानुसार घटाई–बढ़ाई जाती है। इसीलिये लय के तीन प्रकार माने गये हैं–विलम्बित, मध्य और द्रुत। संगीत में रसाभिव्यक्ति के तत्वों में ताल का महत्वपूर्ण स्थान है जिसके माध्यम से संगीत में गम्भीरता अथवा चंचलता का आविर्भाव किया जा सकता है। बंदिश की प्रकृति, राग के स्वभाव के अनुसार परस्पर तालमेल होने पर लय विशेष से रस की निष्पत्ति होगी।

विलम्बिल तय के ठेके–तिलवाड़ा, एकताल, झूमरा आदि करूण व शान्त रस को प्रधानता लिए होते हैं। खुले बोलों के ठेके चौताल, आड़ा चौताल, सूलताल आदि वीर रस तथा भक्ति रस प्लावित करते हैं। त्रिताल, झपताल, कहरवा, दादरा, द्रुत एकताल आदि तालें मध्यलय युक्त होती हैं तथा श्रृंगार रस में सहायक होती हैं।

ताल	रस
दादरा ताल	वात्सल्य रस
कहरवा ताल	श्रृंगार रस
एकताल, धमार ताल	श्रृंगार रस
चारताल, आड़ाचारताल	वीर रस

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

वाद्य

वाद्य अपनी आवाज के आधार पर विभिन्न रागों की निष्पत्ति करते हैं। मोटी आवाज हमेशा गाम्भीर्य पैदा करती है, चाहे वह पुरुष की हो या किसी वाद्य की। इसलिए मियाँ मल्हार, दरबारी कान्हड़ा, मारवा आदि रागों की अवतारणा जितनी स्वाभाविक पुरुष कण्ठ से होती है उतनी स्त्री कण्ठ से नहीं। इसी प्रकार वाद्यों में भी भारी (मोटी) आवाज वाले वाद्य, वीणा, सारंगी, वॉयलिन आदि शांत, करूण व गम्भीर वातावरण व रस पैदा करते हैं। दूसरी ओर पतली आवाज वाले वाद्य जैसे सितार, मुरली (छोटी बांसुरी) शहनाई आदि श्रृंगार रस में सहायक होते हैं। किसी विशिष्ट रस की अभिव्यक्ति में कुछ वाद्यों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।[3]

वाद्य	सम्बन्धित रस
सारंगी, वायलिन	करुण रस
ढोलक, तबला	श्रृंगार रस
मृदंग–पखावज	वीर रस
वाद्य–वृन्द	श्रृंगार, करूण आदि

तत् वाद्यों में जोड़, करुण व शान्त रस, विलम्बित व द्रुत गत श्रृंगार रस तथा झाला रौद्र तथा अद्भुद रस के पोषक हैं।

रागों की प्रकृति और उनके प्रभाव

रागों की प्रकृति और उनके प्रभाव को रस निष्पत्ति में अस्वीकार नहीं किया जा सकता। पीलू, पहाड़ी, काफी, खमाज में ध्रुपद की बंदिशें नहीं मिलती। दरबारी, कालकंस, भैरव जैसे रागों में ठुमरी नहीं सुनाई पड़ती जिससे स्पष्ट है कि रागों की प्रकृति के अनुसार ही विशेष शैलियों के प्रति उनकी अनुरूपता निर्धारित की गई है।

समय सिद्धान्त–ऋतुओं के अनुसार

समय व ऋतुएँ भी रस निष्पत्ति में अपना योगदान करती हैं। संगीत–रत्नाकर नामक ग्रन्थ में वर्णित छः ऋतुओं में अलग–अलग गाये जाने वाले रागों के उदाहरण दिये गये हैं–[4]

क्र.सं.	ऋतुएँ	राग
1.	बसन्त	हिन्डोल
2.	ग्रीष्म	भिन्न षड्ज, शुद्ध पंचम
3.	वर्षा	टक्क तथा षड्ज ग्राम
4.	शरद	रगन्ति
5.	हेमन्त	भिन्न षड्ज
6.	शिशिर	गौड़–कैशिक, शुद्ध कैशिक, भिन्न कैशिक

काकु का रसानुभूति में स्थान

काकुभेद रस निष्पत्ति का सर्वोच्चतम स्त्रोत है। संगीत में शब्द भूलकर स्वरों तथा सूक्ष्म भावों को सुनना होगा, तभी इस रस का आनन्द मिलेगा। काकु के 6 भेद माने गये हैं।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

संगीत और रस दोनों में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। गायन द्वारा पशुओं को प्रभावित करना, वर्षा हो जाना, दीप प्रज्जवलित हो जाना ये सभी चमत्कार संगीत द्वारा ही सम्भव है। क्रुद्ध सिंह के क्रोध को संगीत मार्तण्ड पं0 ओंकारनाथ ठाकुर जी ने संगीत सुनाकर ही शान्त किया था। संगीत जितनी सूक्ष्म कला है उतनी असीम भी है कि बन्दिश के हर मात्रा काल में भिन्न–भिन्न रसों की अवतारणा हुआ करती है। रस का संगीत में विशिष्ट स्थान है ''रसते इति रसः'' रस मनुष्य के अंतःकरण की निधि होती है।

श्री भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में कहा है–

''विभावानुभावव्याभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः''

विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भावों के संयोग से अर्थात् तीनों के मिश्रण से 'रस' की निष्पत्ति होती है।

रस में 'आंगिक' अनुभाव का स्थान गौण है। संगीत में सुनने की प्रधानता होने पर भी गाने–बजाने वाले को देख सकें तो विशेष संतोष ही मिलता ही है। गायक–वादक कलाकार के चेहरे के भाव, लय के आघात और प्रत्याघातों के साथ हस्तसंचालन, ध्वनि का विशालता और संकुचन दिखाने के लिए किया गया अंगविन्यास, तार–मन्द्र–स्थान के गायन–वादन के साथ का साकेतिक अभिनय, तानों की गति और क्लिष्टता दिखाने के लिए उँगलियों का लाघव आदि अभिनय, आंगिक अनुभाव का स्थान ले सकते हैं और लेते भी हैं।

'साधारणीकरण' की शक्ति तो संगीत में सर्वाधिक समझी गई है और इसीलिए नाटक या चलचित्र के पूर्व, भाषण या उपदेश के पूर्व, कक्षाओं या सभाओं पूर्व प्रार्थना या स्तुति के रूप में संगीत द्वारा ईश्वर की आराधना की जाती है। मन को एकाग्रता प्रदान करने, सांसारिक व्याधियों को भुलाने में सहायक, निज सुख–दुःखादि भाव से ऊपर उठाकर सामाजिक को रसग्रहण योग्य बनाने में संगीत का योगदान और महत्व सविशेष है।

निष्कर्ष

संगीत सिर्फ मनोरंजन का ही साधन नहीं रहा है बल्कि संगीत इंसानों को एक ब्रह्माण्डीय सत्ता में विकसित करने का तरीका भी रहा है। रस हमारी अंतःकरण की वह शक्ति है जो हमें इन्द्रियों के द्वारा आनन्द, दुःख, डर, हास्य इत्यादि का अनुभव कराता है।

संगीत को अत्यन्त सशक्त बनाने में कई महत्वपूर्ण आधार स्तम्भ होते हैं जिनकी सहायता से रस की उत्पत्ति होती है। वैसे तो संगीत का मूल आधार नाद ही है। अतः संगीत में तो वह पूर्णतः विद्यमान है। इसके अतिरिक्त भी अन्य कई बिन्दु होते हैं जिनका रसपान करके कलाकार श्रोता को आकर्षित व आनन्दित कराता है। अतः जिस संगीत से हमें आनन्दानुभूति है उस संगीत रस परिपाक में कई ऐसी महत्वपूर्ण आधारशिलायें होती हैं जिनकी अपनी अनोखी, अविरल छटायें होती हैं।

सन्दर्भ

शर्मा स्वतंत्र, (2010) सौन्दर्य, रस एवं संगीत, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद।
द्विवेदी रमाकान्त, (2004). संगीत स्वरित, साहित्य रत्नालय, कानपुर।
गर्ग लक्ष्मीनारायण, (2011). जुलाई, संगीत मासिक पत्रिका, संगीत कार्यालय, हाथरस।
टाक तेजसिंह, 2001, संगीत जिज्ञासा और समाधान, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।